अगर लोग आपको जानते .. तो अवश्य आपसे प्यार करते

संकलन :

ख़ालिद अल-ख़िलेवी

جمعية خدمة المحتوى الإسلامي باللغات ، ١٤٤٥ هـ

الخليوي ، خالد

لو عرفوك لأحبوك - هندي. / خالد الخليوي ؛ جمعية خدمة المحتوى الإسلامي باللغات - ط.١ -. الرياض ، ١٤٤٥هـ

٢٤٣٠ ص ؛ ١٤ × ٢١ سم

ردمك: ٩٧٨-٦٠٣-٨٤٤٢-٤٩-٤

١٨٩٣٤/ ١٤٤٥

شركاء التنفيذ:

دار الإسلام

جمعية الربوة

رواد الترجمة

المحتوى الإسلامي

Tel: +966 50 244 7000
info@islamiccontent.org
Riyadh 13245- 2836
www.islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم
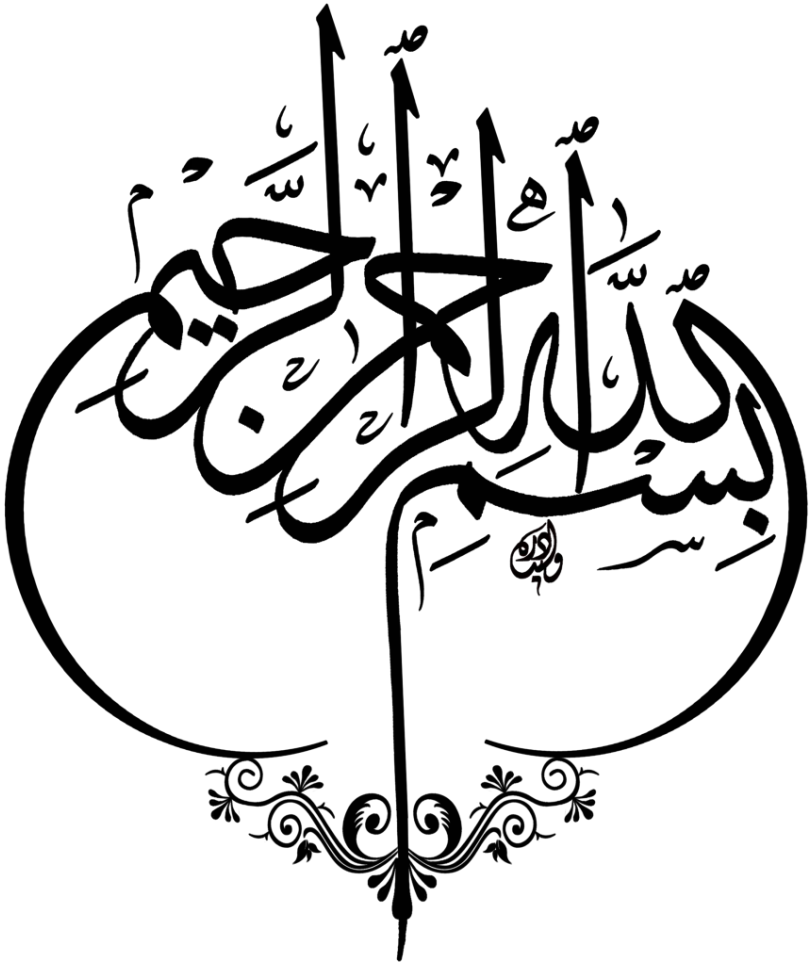
प्रिय पाठक! आपका स्वागत है।

मैं महान अल्लाह - जिसने आकाशों तथा धरती को बनाया - से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको एवं आपके सभी चाहने वालों को ख़ुश तथा स्वस्थ रखे और जब आपको यह पुस्तिका मिले, तो आप अच्छे, स्वस्थ और सुरक्षित हों।

...

मैंने पैगंबर मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की संपूर्ण जीवनी दर्जनों बार पढ़ी।

इसी तरह मैंने पूरा क़ुरआन, जो अल्लाह ने उनपर उतारा है, सैकड़ों बार पढ़ा।

मैंने पाया कि हृदय इस नबी से महब्बत किए बग़ैर, उनकी जीवनी से संतुष्ट एवं ईमानदारी से आश्वस्त हुए बग़ैर नहीं रह सकता।

फिर मैंने इस जीवनी को पढ़कर आपके लिए कुछ सुंदर बातों का चयन किया है।

शायद आपको यह पसंद आएगा... और यह इस दुनिया में आपका रास्ता रोशन कर देगा। आपकी आत्मा प्रसन्न होगी... आपका दिल आश्वस्त होगा... और आपकी आत्मा को आराम मिलेगा।

आपका भाई : ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह

- जब अल्लाह ने मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को उनके समुदाय की ओर नबी बनाकर भेजा, तो इसका सबसे बड़ा उद्देश्य था लोगों को अकेले अल्लाह की इबादत करने और उसके बताए हुए मार्ग पर चलने का आह्वान करना। क्योंकि अल्लाह ही ने लोगों को पैदा किया तथा वही बेहतर जानता है कि उनके लिए क्या अच्छा है। नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम- इस मामले में अपने पहले के नबियों - उनपर अल्लाह की शांति हो - की तरह ही हैं।

आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- कोई समाज सुधारक या बुद्धिमान विचारक नहीं थे, बल्कि आप अल्लाह की ओर से भेजे गए एक रसूल थे, जो महान एवं उच्च अल्लाह की वह्य (प्रकाशना) के अनुसार चलते थे।

...

- प्राचीन युग में एक आदमी से पूछा गया : तुम नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर ईमान क्यों लाए, तो उसने बहुत सुंदर उत्तर दिया। उसने कहा : मैंने उनको

पाया कि वह किसी ऐसी चीज़ का आदेश नहीं देते हैं, जिससे मानव विवेक रोकता हो, तथा किसी ऐसी चीज़ से नहीं रोकते हैं, जिसका मानव विवेक आदेश देता है।

इस आधार पर, मैं इस पुस्तिका के अंत में संपर्क और प्रश्न के लिए एक लिंक दूँगा।

...

- अल्लाह ने आपको सभी इनसानों की ओर नबी बनाकर भेजा। आप अंतिम नबी थे। इसलिए आपका चमत्कार क़ियामत तक बाक़ी रहेगा। वह चमत्कार है, यह क़ुरआन, जिसके द्वारा अल्लाह ने वाक्पटु अरबों को चुनौती दी कि वे उसकी तरह कोई किताब, या दस सूरतें या एक ही सूरत ले आएँ। परंतु वे असमर्थ रहे। यह चुनौती आज तक क़ायम है।

...

- अल्लाह ने क़ुरआन को चौदह सौ साल पूर्व उतारा और हर गुज़रते दिन एवं बढ़ते वैज्ञानिक विकास तथा खोज के साथ इस चमत्कार की महानता एवं मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के संदेश की सच्चाई के प्रमाण और निश्चितता में वृद्धि ही हुई है।[1]

...

- नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की दावत अर्थात आह्वान कोई ऐसा दर्शन नहीं था, जिसको समझना या लागू करना लोगों के लिए मुश्किल हो। बल्कि यह स्पष्ट एवं सरल था, जिसे हर पढ़ा लिखा एवं अनपढ़ व्यक्ति समझ सकता है। यह आसानी एवं क्षमता पर आधारित है।

ऐसा भी नहीं है कि इस्लाम धर्म एक क्षेत्र विशेष के लिए है एवं दूसरे क्षेत्र के लिए नहीं, बल्कि यह जीवन के हर क्षेत्र के लिए एक संपूर्ण संविधान है। उच्च एवं महान अल्लाह ने खुद क़ुरआन के अंदर क़ुरआन के विषय में कहा है : रमज़ान का महीना वह है, जिसमें क़ुरआन उतारा गया, जो लोगों के लिए मार्गदर्शन है।" [सूरतुल-बक़रा : 185]

तथा सूरत इसरा में फरमाया : "निःसंदेह यह क़ुरआन वह मार्ग दिखाता है, जो सबसे सीधा है और उन ईमान वालों को, जो अच्छे कर्म करते हैं, शुभ सूचना देता है कि उनके लिए बड़ा बदला है।" [सूरतुल-इस्रा : 9]

...

[1] अधिक जानकारी के लिए, यूट्यूब पर "क़ुरआन का बड़ा चमत्कार" के विषय पर डॉ. जाकिर नाइक के व्याख्यान और बहस को देखा जा सकता है।

- अब्दुल्लाह बिन सलाम -अल्लाह उनसे राज़ी हो-, जो पहले यहूदी थे और बाद में मुसलमान हो गए, कहते हैं : मैं मदीना में उन लोगों के साथ था, जो अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के मदीना आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब वह आ गए और मेरी नज़र उनके चेहरे पर पड़ी, तो मैं जान गया कि उनका चेहरा किसी झूठे का चेहरा नहीं है।

सबसे पहली बात जो मैंने उनको कहते हुए सुनी, यह थी : "ऐ लोगो! सलाम फैलाओ, रिश्तों-नातों का ख़याल रखो, लोगों को खाना खिलाओ और रात में जब लोग सो रहे हों तो उठकर नमाज़ पढ़ो, (इसके फलस्वरूप) तुम सुरक्षित रूप से जन्नत में प्रवेश पा जाओगे।"

...

- अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- 40 वर्षों तक अपने समुदाय के साथ मक्का में रहे। मक्का वाले उन्हें स़ादिक़ (सच्चा) एवं अमीन (अमानतदार) कहकर पुकारते थे। जब वे यात्रा करना चाहते, तो अपनी अमानतें उनके पास रख देते थे।

अल्लाह ने जब उन्हें रसूल के तौर पर चुना और वह लोगों को एक अल्लाह की इबादत करने तथा हराम, व्यभिचार, अन्याय और लोगों की अन्यायपूर्वक हत्या से दूर रहने की ओर बुलाने लगे, तो उनमें से बहुतों ने उनसे दुश्मनी कर ली। परंतु अंत में असत्य पर सत्य की जीत हुई। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "और हमपर ईमान वालों की सहायता करना अनिवार्य था।" [सूरतुर-रूम : 47]

उन लोगों के पास बहुत बड़ा अवसर था कि वे सत्य की ओर बुलाने वाले नबी की मदद करते! परंतु उन लोगों ने घमंड किया तथा मुँह फेर लिया। इसलिए वे घाटे में रहे।

...

- हमारे नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक यह थी कि आप निकटवर्ती या दूर वाले, छोटे या बड़े, सबके साथ न्याय करने के लिए जाने जाते थे। आप लोगों को दूसरों पर अत्याचार करने से मना करते थे, भले ही वह एक दिरहम के लिए ही क्यों न हो। आपका कहना है : "अत्याचार से बचो, क्योंकि अत्याचार क़ियामत के दिन अंधकार का कारण होगा।"

आपका यह भी कहना है : "यदि मुहम्मद की बेटी (मेरी बेटी) फ़ातिमा भी चोरी करती, तो निश्चय मैं उसका हाथ काट देता।"

...

- आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- लोगों को बताते थे कि अल्लाह के निकट पैमाना धन की बहुतायत, न ही बुद्धि की प्रचुरता और न ही व्यापक सामाजिक संबंध है। बल्कि, यह मापदंड हृदय की पवित्रता, विश्वास (ईमान) की महानता, नैतिकता की सुंदरता, अच्छे व्यवहार, सच बोलने और अच्छे कर्म करने का है। आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है : "किसी अरबी को किसी गैर अरबी पर और किसी गैर अरबी को किसी अरबी पर, किसी गोरे को किसी काले पर और किसी काले को किसी गोरे पर कोई वरीयता प्राप्त नहीं है। अगर वरीयता प्राप्त है, तो धर्मनिष्ठा एवं परहेज़गारी की बुनियाद पर।" खुद अल्लाह ने अपनी किताब में फरमाया है : "निःसंदेह अल्लाह के निकट तुममें सबसे अधिक सम्मान वाला वह है, जो तुममें सबसे अधिक तक़्वा वाला है।।" [सूरतुल-हुजुरात : 13]

इससे अधिक जघन्य अन्याय क्या होगा कि किसी व्यक्ति को उसके चेहरे के रंग, या उसके नाम के अर्थ, या उसके माता-पिता के धर्म, या मात्र उसकी नागरिकता, या किसी ऐसे मामले के लिए जवाबदेह ठहराया जाए या दंडित किया जाए, जो उसके हाथ में नहीं है। वह तो हिकमत वाले, दयालु अल्लाह की सृष्टि है।

...

- नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- वैवाहिक संबंध को बहुत महत्व देते थे; चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शरई विवाह को वह आधार बनाया जिस पर परिवार का निर्माण होना चाहिए। इसलिए कि यही वह मज़बूत बुनियाद है, जिसपर ऊँची इमारत खड़ी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आपने सभी दरवाज़ों को बंद कर दिया, जिनसे उत्पन्न होने वाली मुसीबतों एवं शारीरिक तथा नैतिक रोगों से दुनिया आज तक जूझ रही है।

आप इस मामले में लोगों के लिए एक बेहतरीन आदर्श थे। आपका फरमान है : "तुममें से सबसे बेहतर व्यक्ति वह है, जो अपने परिवार के लिए बेहतर है और मैं अपने परिवार के लिए तुममें सबसे बेहतर हूँ।"

विवाह नाम है प्रेम, दया, सहयोग, पवित्रता, सच्चाई एवं प्रशिक्षण का। यह सब उम्मत में एक नेक परिवार बनाने के लिए है।

...

- सबसे पहले कर्तव्यों में से जिनका अल्लाह ने अपने नबी को आदेश दिया था, एक कर्तव्य नमाज़ पढ़ना है। दिन-रात में पाँच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ हैं, जिनको मस्जिद में जमाअत के साथ पढ़ना ज़रूरी है। जहाँ तक औरतों की बात है, तो उनके लिए घरों में नमाज़ पढ़ना ही उत्तम एवं सुविधाजनक है।

नमाज़ नाम है महान अल्लाह का सम्मान करने, अधिक से अधिक उसको याद करने, उसकी प्रशंसा करने एवं इनसान को इस दुनिया में जिसकी भी ज़रूरत हो, उसे उससे मांगने का। क्योंकि वही उसका रब है, जिसने उसे पैदा किया है एवं उसकी जीविका की गारंटी ली है।

नमाज़ से पहले वुज़ू करना आवश्यक है। वुज़ू दृश्य अंगों (चेहरा, कोहनी समेत दोनों हाथों, सिर का मसह करने फिर टखनों समेत दोनों पैरों) को धोने का नाम है।

यह आदेश इसलिए है कि आदमी दोनों पवित्रता को जमा कर ले। वज़ू द्वारा बाहरी पवित्रता एवं नमाज़ द्वारा हृदय तथा आत्मा की पवित्रता।

तनिक उस व्यक्ति की स्वच्छता की कल्पना करें जो इन समयों में हर दिन अपने आपको धोता है कि उसकी स्वच्छता एवं पवित्रता कैसी होगी?!

...

चूँकि नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अत्यंत सुंदर छवि और अद्भुत जीवन के मालिक थे। अतः मैंने आपकी जीवनी से बहुत सारी बातें सीखी हैं। उनमें से कुछ बातें इस प्रकार हैं :

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सीखा है कि :

अल्लाह ने लोगों को आज़ाद पैदा किया है। मगर यह आज़ादी बेलगाम नहीं है। यदि यह आज़ादी आपको या किसी दूसरे को शारीरिक या नैतिक रूप से नुकसान पहुँचाती है, तो यहाँ आपकी आज़ादी की सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं।

आपकी आज़ादी का अर्थ यह नहीं है कि अगर दूसरे आपको ग़लती पर देखते हैं, तो वे आपको उपदेश नहीं देंगे। ध्यान रहे कि एक खुशहाल जीवन सहयोग, परस्पर नसीहत और प्यार पर आधारित है।

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

पड़ोसियों के अधिकारों की रक्षा करूँ, उनके साथ अच्छा व्यवहार करूँ, वे मेरी ओर से कष्ट एवं नुक़्सान पहुँचने से सुरक्षित रहें और मैं समय-समय पर उनके साथ भोजन के उपहार का आदान-प्रदान करूँ, ताकि आपस में प्यार बढ़े एवं अपनापन परवान चढ़े।

आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है : "जिबरील (अलैहिस्सलाम) मुझे बराबर पड़ोसी के बारे में ताकीद करते रहे, यहाँ तक कि मैं यह सोचने लगा कि वह उसे विरासत में हिस्सेदार बना देंगे।"

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

मैं बाहरी रूप से साफ कपड़े और सुंदर इत्र से खुद को सुशोभित करूँ, तथा अंदर से भी सुंदरता अपनाऊँ। अतः अच्छी नीयत रखूँ, दूसरों के लिए भलाई को पसंद करूँ, उनकी सफलता पर ख़ूश होऊँ एवं उनके लिए वही पसंद करूँ, जो अपने लिए पसंद करता हूँ। आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है : "अल्लाह सुंदर है एवं सुंदरता को पसंद करता है।"

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

सुंदरता, नंगेपन की तुलना में, पर्दे से अधिक झलकती है। जब भी इनसान और विशेषकर औरतें पर्दे में होती हैं, तो वह अधिक सुंदर एवं ख़ूबसूरत लगती हैं। जब भी नंगापन बढ़ता है, तो बदसूरती एवं मुसीबतें ज़्यादा होने लगती हैं।

यदि इनसान अपने असली स्वभाव (प्रकृति) की ओर लौट आए, तो जान जाएगा कि पर्दा को पसंद करना एवं नंगापन से दूर भागना उसके मूल स्वभाव में दाखिल है।

आप इसको उस समय आसानी से जान जाएंगे, जब आप तुलना करेंगे उन देशों में होने वाले अपराधों की, जिनमें नंगापन आम है, उन देशों के साथ, जो नंगेपन की अनुमति नहीं देते हैं। ऐसा करने से आपके सामने वास्तविकता खुलकर आ जाएगी।

महान एवं उच्च अल्लाह ने सूरतुल-आराफ़ में फरमाया है : "ऐ आदम की संतान! निश्चय हमने तुमपर वस्त्र उतारा है, जो तुम्हारे गुप्तांगों को छिपाता है और शोभा भी है। और तक़वा (अल्लाह की आज्ञाकारिता) का वस्त्र सबसे अच्छा है।" [सूरतुल-आराफ़ : 26]

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

मैं बच्चों से प्यार करूँ, उनके प्रति दयालु बनूँ, उनके लिए विनम्रता धारण करूँ, उनके साथ धैर्य रखूँ, उनकी तरबियत के लिए प्रयासरत रहूँ, ताकि वे अपने समाज में सफल व्यक्ति बन सकें।

जो लोग उनपर रहम नहीं करते, बल्कि उनको प्रताड़ित करते हैं, जैसा कि जंगों इत्यादि में होता है, वे अल्लाह की रहमत से वंचित हैं तथा उनको दुनिया एवं आख़िरत में कष्टदायक सज़ा की धमकी दी गई है।

अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है : "जो हमारे छोटों पर दया न करे और हमारे बड़ों का सम्मान न जाने, वह हममें से नहीं है।"

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

मेरे शरीर का भी मुझपर अधिकार है, जैसे उसको लाभदायक तथा हलाल खाना खिलाना और हर उस निवाला से दूर रहना, जो हराम स्रोत से आया हो या ऐसे खाने से दूर रहना, जो मेरे शरीर को वर्तमान या भविष्य में नुक़सान पहुँचाए।

नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है : ''हर वह मांस, जो हराम माल से पला-बढ़ा है, आग उसका अधिक हकदार है।''

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सीखा है कि :

शरीर एवं वस्त्र के पाक व साफ़ होने से पूर्व मेरी ज़ुबान तथा हृदय साफ़-सुथरे हों, ताकि मेरे लिए दोनों प्रकार की सुंदरता इकट्ठी हो जाए।

क्योंकि जो पाक अल्लाह चाहता है कि तुम बाहरी तौर पर स्वच्छ रहो, वही पाक अल्लाह यह भी चाहता है कि तुम अंदरूनी तौर पर भी स्वच्छ रहो।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "निश्चय अल्लाह तौबा करने वालों तथा पवित्र रहने वालों से प्रेम करता है।" [सूरतुल-बक़रा : 222]

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

इनसान को अपनी पत्नी के साथ सहवास करने के बाद अनिवार्य रूप से नहाना चाहिए, ताकि वह पवित्र और चुस्त रहे। जो इस चीज़ को आज़माएगा, वह इस धार्मिक विधान की सुंदरता को जान जाएगा।

यही आदेश मासिक धर्म वाली औरत के लिए है। जब वह पाक हो जाए, तो उसपर नहाना वाजिब है तथा उससे पहले भी नहाते रहना उसके लिए मुस्तहब (अच्छा) है।

ये सारे आदेश इसलिए हैं कि इनसान पाक रहे और उसके संवेदी और मनोवैज्ञानिक लाभ उठाए।

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

अल्लाह तआला के निकट माता-पिता का अधिकार बहुत बड़ा है। लोगों में माता-पिता ही अच्छे व्यवहार, अच्छी संगति तथा महान धैर्य के सबसे अधिक योग्य हैं।

अल्लाह तआला ने उनकी ख़ुशी में अपनी ख़ुशी एवं उनकी नाराज़गी में अपनी नाराज़गी रखी है। आप याद करें कि संसार में माता-पिता की कितनी बड़ी अवज्ञा हो रही है,

यहाँ तक कि आप बच्चों द्वारा अपने माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार के बारे में ऐसी कहानियाँ सुनेंगे जो लगभग अविश्वसनीय हैं।

जबकि अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है : "क्या मैं तुम्हें सबसे बड़े गुनाहों के बारे में नहीं बताऊँ? लोगों ने कहा : क्यों नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल! आपने फरमाया : (तो सुनो) अल्लाह के साथ शिर्क करना और माता-पिता की अवज्ञा करना। आप टेक लगाकर बैठे हुए थे, लेकिन सीधा होकर बैठ गए और फरमाया : तथा आगाह हो जाओ, झूठी बात कहना एवं झूठी गवाही देना! खबरदार हो जाओ, झूठी बात कहना एवं झूठी गवाही देना! आप इस बात को इतनी बार दोहराते रहे कि मैंने सोचा कि आप चुप नहीं होंगे।"

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

माता-पिता के कंधे पर, औलाद बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है।

अल्लाह क़ियामत के दिन माता-पिता से उनके संबंध में प्रश्न करेगा। माता-पिता को अपने बच्चों के प्रति दयालु होना चाहिए, उनका अच्छे से पालन-पोषण करना चाहिए और उनके लिए एक अच्छा आदर्श बनना चाहिए।

औलाद के साथ माँ-बाप का रिश्ता कभी ख़त्म नहीं होता है। यह रिश्ता जीवन के अंत तक क़ायम रहता है। (यह संबंध) वैसा नहीं है, जैसा कि दुनिया के बहुत सारे देशों में होता है कि 18 वर्ष की आयु के बाद बच्चों को घर से निकाल दिया जाता है। उनके बीच वास्तविक रिश्ता टूट जाता है। जिसके नतीजे में बर्बादी और बिगाड़ जन्म लेती है, जिसकी पुष्टि बहुत सारे देशों के सरकारी आंकड़े करते हैं।

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

मैं बीमार को देखने जाऊँ, उसके लिए दुआ करूँ, उसके हृदय को प्रसन्न करने का प्रयास करूँ और इलाज में उसकी मदद करूँ, यद्यपि वह उनमें से न हो, जिनको मैं जानता हूँ। क्योंकि अल्लाह अपने बंदों से यह चाहता है कि वे उसके बंदों का भला करें। उसने कहा है : "उपकार का बदला उपकार ही है।" [सूरतुर-रहमान : 60]

दूसरों के साथ भलाई करने के कारण भलाई करने वाले के हृदय में असीम सुख एवं आनंद का संचार होता है।

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

मैं अपनी ज़ुबान या हाथ से किसी को नुक़सान न पहुँचाऊँ, चाहे वह कोई जानवर ही क्यों न हों। आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने मुझे बताया है कि एक महिला को

इसलिए सज़ा हुई, क्योंकि उसने एक बिल्ली को बाँध कर रखा था। न उसको खुद खाना दिया और न ही उसे छोड़ा कि वह धरती की चीज़ों को खाए।

बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने समस्त सृष्टि के साथ उपकार करने का आदेश दिया है, चाहे वह इनसान हो, जानवर हो या पेड़-पौधा। आपने फरमाया है : "अल्लाह ने प्रत्येक चीज़ में एहसान (उपकार) को अनिवार्य करार दिया है।"

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया : "और भलाई करो, अल्लाह भलाई करने वालों को पसंद करता है।" [सूरतुल-बक़रा : 195]

इसी तरह सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने फरमाया : "धरती पर बिगाड़ पैदा न करो।" [सूरतुल-बक़रा : 11] एक अन्य स्थान पर फरमाया : "और धरती पर उसके सुधार के बाद, फ़साद न फैलाओ।" [सूरतुल-आराफ़ : 56]

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

सभी नबी भाई-भाई हैं और वे एक ही चीज़ की तरफ लोगों को बुलाते थे और वह है सर्वशक्तिमान अल्लाह का एकेश्वरवाद। तथा नैतिकता के सिद्धांतों का आह्वान करते थे, जैसे- सच्चाई (ईमानदारी), न्याय, अमानत, उदारता, भलाई के कामों में सहयोग करना, तथा झूठ, अत्याचार, धोखा, विश्वासघात, व्यभिचार, शराब पीना एवं सोचने-समझने की क्षमता को प्रभावित करने वाली तमाम चीज़ों से दूर रहने की शिक्षा देते थे।

उनके बीच भिन्नता केवल इबादत के मामलों, जैसे नमाज़ और रोज़े आदि के बारे में है। सबसे पहले नबी आदम -अलैहिस्सलाम- थे एवं सबसे अंतिम नबी व रसूल मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- हैं।

ईसा -अलैहिस्सलाम- अल्लाह के बंदे एवं उसके रसूल थे। अल्लाह ने उनको एवं उनकी माता मर्यम -अलैहस्सलाम- को बहुत सारे चमत्कार प्रदान किए थे।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन में 25 बार ईसा -अलैहिस्सलाम- का उल्लेख किया है। उनकी माँ मर्यम अलैहस्सलाम के नाम से क़ुरआन में एक पूरी सूरत ही मौजूद है।

मैं ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सीखा है कि सभी नबियों से प्यार करूँ, क्योंकि वे अल्लाह के निकट सर्वश्रेष्ठ सृष्टि हैं।

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

मैं किसी का उसकी शक्ल, या नागरिकता, या बोलने के ढंग या चलने के ढंग के कारण मज़ाक़ न उड़ाऊँ। हो सकता है वह अल्लाह के निकट मज़ाक़ उड़ाने वाले से बेहतर हो, और हो सकता है कि (उसके बुरे) दिन गुज़र जाएँ एवं स्थिति बदल जाए। अतः आपको अधिक से अधिक अल्लाह की प्रशंसा करनी चाहिए एवं उसका धन्यवाद करते रहना चाहिए।

अल्लाह तआला ने सूरत हुजुरात में फरमाया है : "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! एक जाति दूसरी जाति का उपहास न करे, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों। और न कोई स्त्रियाँ अन्य स्त्रियों की हँसी उड़ाएँ, हो सकता है कि वे उनसे अच्छी हों।" [सूरतुल-हुजुरात : 11]

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

इनसान कभी न कभी अवश्य भूल करता है। इसलिए उस पर वाजिब है कि वह जितनी जल्दी हो सके, अपनी ग़लती को स्वीकार करे, तौबा करे एवं हर संभव अपनी ग़लती को सुधारने की कोशिश करे। सत्य की ओर लौटना असत्य पर अड़े रहने से बेहतर है। नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है : "आदम की प्रत्येक संतान ग़लती करती है और ग़लती करने वालों में सबसे उत्तम लोग वे हैं, जो अत्यधिक तौबा करने वाले हैं।"

तथा (मैंने सीखा कि) ग़लती यदि अल्लाह के हक़ में हो, तो तौबा करूँ, माफ़ी चाहूँ और अपने रब से क्षमा करने एवं दर-गुज़र करने की भीख मांगूँ।

लेकिन ग़लती यदि बंदे के हक़ में हो, तो उससे माफ़ी माँगूँ और बिना कुछ कमी किए उसका हक़ उसको लौटा दूँ।

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

जीवन परिवार के बीच सहयोग और समन्वय पर आधारित होना चाहिए। यदि कोई सही कर रहा है, तो आप उसको धन्यवाद दें और उसकी हिम्मत बढ़ाएँ, और यदि कोई ग़लती कर रहा है, तो उसको सही मार्ग दिखाएँ तथा उसे सिखाएँ। क्योंकि इनसान अकेला बहुत कमज़ोर है और अपने भाइयों के साथ मिल कर मज़बूत हो जाता है। अल्लाह तआला का फरमान है : "तथा आपस में नेकी एवं संयमता में सहयोग करते रहो और बुराई एवं अत्याचार में सहयोग न करो।" [सूरतुल-मायदा : 2]

तथा अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "धर्म ख़ैरख़्वाही (एक-दूसरे का हित चाहने) का नाम है।"

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

उपहार भले ही छोटा हो, परंतु प्यार बढ़ाता है। इससे सुंदर और क्या बात होगी कि इनसान कभी-कभी अपनी पत्नी, परिवार एवं दोस्तों को उपहार पेश करे, ताकि उनके बीच प्यार एवं अपनापन परवान चढ़े। अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है : "एक-दूसरे को उपहार दिया करो, इससे तुम्हारा आपसी प्रेम बढ़ेगा।"

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

शरीर की सफ़ाई ज़रूरी है। किसी भी व्यक्ति के लिए जायज़ नहीं है कि वह 40 दिन से अधिक अपने बगल के बालों, नाखूनों या दूसरी चीज़ों के साफ़ करने में देरी करे। यदि इस अवधि से पहले साफ़ कर ले तो उत्तम एवं बेहतर है। इनसान जितना पाक-साफ़ रहेगा, वह अपने लिए एवं दूसरों के लिए उतना ही अधिक स्वीकार्य होगा। अल्लाह तआला ने फरमाया : "निःसंदेह अल्लाह उनसे प्रेम करता है जो बहुत तौबा करने वाले हैं और उनसे प्रेम करता है जो बहुत पाक रहने वाले हैं।" [सूरतुल-बक़रा : 222]

...

- मैंने आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से सीखा है कि :

पूरे रमज़ान के महीने का रोज़ा रखूँ, जब तक मैं उसकी क्षमता रखूँ। रमज़ान अरबी का नौवाँ महीना है। इसी महीने में अल्लाह ने नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर क़ुरआन उतारा था। रोज़ा फ़ज्र की अज़ान से लेकर सूर्यास्त तक खाने, पीने एवं संभोग से दूर रहने का नाम है।

इस रोज़ा में स्वास्थ्य है, आत्मा की शुद्धता है, मन की पवित्रता है, धैर्य पर प्रशिक्षण है एवं उन ग़रीबों की भावनाओं का ध्यान रखना, जिन्हें पूरे वर्ष भोजन नहीं मिलता है, इसके अलावा अन्य महान लाभ हैं।

...

अंत में कहना है कि...

यह इस महान पैगंबर से मैंने जो सीखा है उसका एक हिस्सा है। उम्मीद है कि अल्लाह इस मधुर संसाधन और सुंदर बगीचे के बारे में और अधिक लिखने की सुविधा प्रदान करेगा।

निम्न में कुछ वेबसाइट हैं, जिनसे आप लाभ उठा सकते हैं या किसी चीज़ के बारे में प्रश्न पूछ सकते हैं :

Edialoguec.sa

Islamreligion.com

अधिक जानकारी एवं अपनी भाषा में संदर्भ पुस्तकों के लिए इस वेबसाइट को देख सकते हैं :

Islamhouse.com

ऐ हमारे रब!

मेरे इन शब्दों में बरकत दे तथा इन्हें इस दुनिया में मेरे और मेरे प्रियजनों के लिए प्रकाश बना दे। (आमीन!)